कर्ण का चरित्र चित्रण

उत्तर : श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' कृत **'कर्ण'** खण्डकाव्य का नायक स्वयं कर्ण है। कर्ण की चरित्रगत विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

(1) सुन्दर, आकर्षक एवं तेजवान्—कर्ण सूर्य से उत्पन्न कुन्ती का पुत्र है। उसके भव्य मुखमण्डल पर अपूर्व तेज विद्यमान है। जब अधिरथ सूत ने उसे गंगा से निकाला था, तब उसे भी कर्ण के तेजस्वी व्यक्तित्व का ज्ञान नहीं था। कवि ने कर्ण के तेजयुक्त मुख की प्रशंसा इस प्रकार की है—

अधिरथ को क्या ज्ञात कि उसने कौन रत्न पाया है।
वह क्या जाने तेज सूर्य का उसके घर आया है॥

कुन्ती जब कर्ण के पास जाती है, तब वह भी अपने पुत्र की शोभा को देखती ही रह जाती है। कवि ने कर्ण की तेजस्वी छटा का वर्णन करते हुए लिखा है—

एक सूर्य था उगा गगन में ज्योतिर्मय छविमान।
और दूसरा खड़ा सामने पहले का उपमान॥

(2) शीलवान् तथा विनम्र—कर्ण अपमानित होकर भी दूसरों के सम्मुख अशिष्ट तथा असंयत नहीं होता। वह अपने भाग्य को कोसता है, किन्तु किसी

बड़े-छोटे व्यक्ति की निन्दा नहीं करता। भीष्म पितामह द्वारा अधम, नीच तथा सूत-पुत्र कहे जाने पर भी वह उन्हें कोई उत्तर नहीं देता। माता कुन्ती को भी वह हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। श्रीकृष्ण से अपनी दृढ़-प्रतिज्ञा की बात भी वह मधुर वचनों में ही कहता है।

(3) महादानी—कर्ण अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध है। अपने प्राणों को संकट में डालकर भी वह ब्राह्मण-वेश में आए कपटी इन्द्र को अपने कवच-कुण्डल दान में दे देता है। कर्ण कहता भी है कि ब्राह्मण द्वारा माँगने पर वह अपने हाथों को पीछे नहीं खींच सकता—

ब्राह्मण माँगे दान, कर्ण लौटा दे उसे निराश।
फिर उसकी बातों पर जग को क्यों होगा विश्वास?

कर्ण कपट-वेशधारी इन्द्र से पूछता है कि वह उसे हाथी, घोड़े, स्वर्ण अथवा सिंहासन आदि में से क्या दान में दे? वह कहता है कि भले ही धरती काँप उठे, आकाश फटने लगे, किन्तु कर्ण अपनी दानशीलता से पीछे नहीं हट सकता—

चाहे पलट जाए पल भर में महाकाल की धारा।
वीर कर्ण का किन्तु न झूठा हो सकता प्रण प्यारा॥

कर्ण की दानशीलता वस्तुत: अतुलनीय है।

(4) अन्तर्विरोधों से घिरा, जन्म से तिरस्कृत, अभिमानी, किन्तु धैर्यवान्—कर्ण का चरित्र अनेक अन्तर्विरोधों से परिपूर्ण था; क्योंकि उसका जन्म कुन्ती की कौमार्यावस्था में हुआ था। लोकलाज के कारण कुन्ती ने उसे गंगा में बहा दिया। अधिरथ सूत के यहाँ उसका लालन-पालन होने से वह सूत-पुत्र कहलाया। कुन्ती द्वारा समय पर इस रहस्य को न खोलने से कर्ण को प्रारम्भ से अन्त तक अपमान का घूँट पीना पड़ा। अपने इस तिरस्कृत जीवन की दु:ख भरी कहानी कर्ण स्वयं श्रीकृष्ण के सम्मुख कहता है—

घृणा, अनादर, तिरस्क्रिया, यह मेरी करुण कहानी।
देखो, सुनो, कृष्ण! क्या कहता इन आँखों का पानी॥

युद्धभूमि म भीष्म ने भी कर्ण का सहयोग न लेने का प्रण दोहराया और कहा—

कुरुसेना में हैं अनेक बलवीर और बलिदानी।
किन्तु कर्ण ही अधिरथी है, एक नीच अभिमानी।।

वह जिस बात को सिद्धान्त रूप में अनुचित मानता था, व्यावहारिक रूप में उसे परिस्थितियोंवश उन्हीं बातों का समर्थन करना पड़ा। यही कारण था कि उसे अहंकारी और अभिमानी कहा गया। यद्यपि वह कर्मवीर, धर्मवीर, ज्ञानवीर और दानवीर था, किन्तु उसके एक अहंकार ने उसके इन गुणों को भी तिरस्कृत करा दिया—

"सत्य कि तुम थे कर्मवीर बलवीर धर्मधारी भी
ज्ञानी और महादानी पर महा अहंकारी भी।"

उसके जीवन के यही अन्तर्विरोध उसके जीवन की विडम्बना बने रहे और यत्र-तत्र वह अपमानित होता रहा। मगर यह उसके चरित्र की महानता थी कि अनेक व्यक्तियों से विभिन्न अवसरों पर अपमानित होने पर भी कर्ण ने अपना धैर्य नहीं खोया। वह परमवीर, रणकुशल तथा आत्मविश्वासी था। यही कारण है कि उसने अपने इन शत्रुओं से डटकर बदला लिया। उसके साथ छल-कपट भी किया गया। कवच-कुण्डल दान में देकर भी वह अत्यन्त धैर्यवान् बना रहा।

(5) दृढ़प्रतिज्ञ एवं कृतज्ञ—पाण्डवों द्वारा अपमानित किए जाने पर केवल दुर्योधन ने ही कर्ण का सत्कार किया था। कर्ण ने दुर्योधन के इस उपकार को कभी नहीं भुलाया। वह आजीवन दुर्योधन के साथ ही रहा। श्रीकृष्ण तथा कुन्ती के समझाने पर भी उसने दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा। सम्राट्-पद का लोभ और भाइयों का प्रेम भी उसे अपने निश्चय से नहीं डिगा सका। वह कहता भी है—

मैं कृतज्ञ हूँ दुर्योधन का, उपकारों से हारा।
राजपाट उसके चरणों पर, चुप धर दूँगा सारा।।

(6) प्रण और धुन का पक्का—कर्ण अपने प्रण और धुन का पक्का है, इसीलिए वह अपनी प्रतिज्ञा पर अटल बना रहता है। वह अर्जुन को युद्ध में मार डालने की प्रतिज्ञा करता है। शर-शय्या पर पड़े हुए भीष्म भी कर्ण को भाइयों के प्रति

प्रेम करने का उपदेश देते हैं; किन्तु कर्ण अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहता है। वह यही कहता है कि युद्ध में अर्जुन की गर्दन मेरे बाणों पर अवश्य लटकेगी।

(7) परमवीर एवं साहसी—महाभारत के समस्त बलशाली वीरों में अकेला कर्ण ही ऐसा साहसी वीर है, जिसके शौर्य की शत्रु भी प्रशंसा करते हैं—

भीष्म, द्रोण, कृपा, अश्वत्थामा सबमें कर्ण अनन्य।
वीरों में वह महावीर प्रत्येक दृष्टि से धन्य॥

सत्य तो यह है कि युद्ध-क्षेत्र में ईमानदारी से उसके सम्मुख कोई भी नहीं डट सकता था। कौरवों की विशाल सेना के बल का वह एक मूलाधार था। इसका वर्णन करते हुए कवि ने कहा है—"**वीर कर्ण के बल पर निर्भर था गुरु-सैन्य समस्त।**" कर्ण के पराक्रम तथा शौर्य की प्रशंसा, मरणासन्न तथा शर-शय्या पर पड़े भीष्म पितामह भी करते हैं। भीष्म पितामह को कर्ण के प्रति अपमानजनक शब्द कहने का बड़ा पश्चात्ताप होता है। वे अपने दु:ख एवं पश्चात्ताप को इन शब्दों के साथ व्यक्त करते हैं—

"निश्चय ही कर्ण धीर, वीर, साहसी, आत्मविश्वासी, तेजस्वी, कृतज्ञ, कर्त्तव्यपरायण, दृढ़प्रतिज्ञ, आजीवन सत्यपथगामी तथा अजेय योद्धा है। वह ममता का भूखा अवश्य है, किन्तु किसी प्रलोभनवश अपने स्वाभिमान का सौदा नहीं करता। उसके जीवन में करुणा और दु:ख के अनेक अवसर उपस्थित हुए हैं। माता द्वारा उसका परित्याग और जीवन के उत्तरार्द्ध में माँ से मिलन—ऐसे अवसर हैं, जो अत्यधिक मार्मिक हैं; किन्तु कर्ण ने अत्यधिक धैर्य के साथ इन स्थलों पर अपने व्यक्तित्व की रक्षा की है। वास्तव में उसमें एक श्रेष्ठ नायक के अनेक गुण विद्यमान हैं।"

खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य/विषय

उत्तर : खण्डकाव्य '**कर्ण**' में कवि **केदारनाथ मिश्र** '**प्रभात**' ने 'महाभारत' के पात्र कर्ण का चरित्र-चित्रण किया है। कर्ण का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक विसंगतियों से जूझते हुए बीता। वह समाज के द्वारा हमेशा प्रताड़ित होता रहा। इसके बाद भी उसने अपने चारित्रिक गुणों से हर युग के समाज को प्रभावित किया है, मैं भी उससे प्रभावित हूँ। वह एक सफल योद्धा, दानवीर और सच्चा मित्र तो था ही, उसमें अद्‌भुत आत्मबल एवं चिन्तन-क्षमता भी थी।

कर्ण अतिमानव नहीं, एक मनुष्य है, जो क्रोध एवं प्रतिशोध जैसे मनोभावों से भी स्वाभाविक रूप में प्रभावित होता है; किन्तु इन अवगुणों के पश्चात् भी वह एक सच्चा मित्र, कुशल योद्धा, दानवीर, त्यागी और कर्मठ पुरुष है। उसके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर ही कवि ने अपने खण्डकाव्य का नामकरण '**कर्ण**' किया है, जो सब प्रकार से उपयुक्त, सार्थक और औचित्यपूर्ण है। कवि ने उसके चरित्र का चित्रण देश के युवाओं को प्रेरित करने हेतु किया है। जहाँ कर्ण के अनेक गुण अनुकरणीय हैं, वहीं कवि ने उसके अन्त का चित्रण करते हुए अपरोक्ष रूप से यह भी स्पष्ट किया है कि ऐसी वीरता, कर्मठता अथवा साहस, जो दुराचारियों के समर्थन हेतु प्रयुक्त होता है; उसका अन्त सदैव करुणाजनक एवं दु:खद ही होता है। यही इस खण्डकाव्य का उद्देश्य है।